का अनुसरण करना चाहिए! साथ ही, उन स्वार्थपरायण व्यक्तियों से नित्य सजग रहे जो दूसरों को सन्मार्ग से भ्रष्ट करते हैं। श्रीभगवान् निश्चित् रूप से परम पुरुषोत्तम हैं तथा उनका लीला-विलास अप्राकृत है, जो इस सत्य को हृदय में धारण कर लेता है, वह गीताध्ययन के उपक्रम से ही जीवन्मुक्त हो जाता है।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः।।४।।

इति भक्तिवेदान्त भाष्ये चतुर्थोऽध्यायः।।

उपक्रम = Begining